

BM 2201

हकीकत १९९५-९६

(नगीनावाडी)

64

मिति वैशाख सुद ४ ✓ संवत् १९९५
से

काती सुद १५ संवत् १९९६ तक

(महाराणा जी श्री भोपाल सिंह जी)

(पृष्ठ १ से १७३)

५५

की की ५३
रु कर ता
४-५
५३६६
१६६५

परजाते श्रीजी हजुर अपोजी ही श्री राजा १६१ सनकर का पादा नहुको
पछे हत नुडा कजला कर पोसा कथार ११११ हु सली डारी डीता ल मुला ऐडे
श्रमा न्यारो गना मरे के के की राजा का ह परजात डी जी म हा मरो
जा हाता मजा म सवार के पीपली गा १२ पपर डी सती सवार के नगनी
वा सप हार की राजा का माली सहु इ रे सु सु को लो डी हे से अपोजी ही
की राजा ही पो को श्री म हा मरो ग ११ का ह म डे मोषा स डे काम हु को

सागी
मोनका
लमा
जे
गरे धन
मल दम
ला ल मे
ता डी सा
जी माये

श्री सु सु को लो डी हे से अपोजी ही श्री राजा अगो लो हु को पोसा कथार ११११ हु
श्री मोण्डरी के से अगो लो अगार पी को ट पछे पती चार नकर हु डारी छे के
जु डी सती सवार हु वा - मोला डी ऐ गे र सागी मो न लाल जा पो सी
नजर मोषा पल करी करे ल नसी गा ट प हार मो पर सवार के समोर का ग
सुरज पोल के डी ही पाछे के शारसी के ल गले प हार श्री गा न वा सवे ह
जादि स राजी के सुरज पोल के का ग म के पा ग डारी हत नी प हार ता म जा म
सवार के हु डारी छे के म पी त म नी वा सप हार श्री राजा जो धुर डी दे वी लाल
मे तारी सालो गोर ध न म ल हा जर हु को नजर मोषा पल कर के बो लो
डी हे से अपोजी ही श्री राजा सी ल कर ग पो का ह जना नी ल ही कस्त हु को
श्री मा न ल डारणी मी सा ल प हार का ह मरो ग सु सु मा ऐ हु को

Jyeshth dark half moon 2, Friday Samwat 1995 dated 5.5.1939.

Sanghi Mohan Lal came, Goverdhan Mal, Devi Lal Mehta's brother-in-law came.

In the morning Shriji Hazur woke up and did 'darshan' of Gods and Goddesses pictures and did 'Chaya Daan'. After ablutions he changed into day clothes and saw the book of Vedic Verses and had a cup of Tea. After this he sat down for morning prayers. Then he had morning meal (Breakfast) and he rested.

Later in Tam Jam went to Pipli Ghat and went by boat to Jag Niwas. After massage he rested and after waking up had mid day meal. Then attended 'Mehkama Khas' work and rested again. After waking up and ablution got dressed up in Mothada, Pag, Angarki, Coat, Pachewadi and at 5.45 pm. got in to the boat. **Motor Agent Sanghi Mohan Lal came, made offering and Nachrawal. Came to Bansi Ghat and then by Motor went via Samor Bag, Suraj Pol, Residency to Parsi Bungalow, Returned via Chaugan, Hazareshwar ji, Suraj Pol, Bag and to Pagda ki Hatni** from there in Tam Jam at 5.45 pm went to Pitam Niwas.

There Devi Lal Mehta Jodhpur's brother-in-law Goverdhan Lal came did Nazar 5) 2) did Nachrawal and then sat for a while and left. Zenana Japta was made for Bada Rani Saheb who came for dinner and then they went to sleep at night in the Zenana Mahal.